EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

B.A. (Hons) Part-III
Paper-VI Group-(B)
By-Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt. of Psy.
D.K. College, Dumraon
VKSU, Ara

OBJECTIVE TYPE OF EXAMINATION

परीक्षा द्वारा बालकों की अर्जित ज्ञान, कौशल एवं योग्यताओं की जाँच की जाती है। परीक्षा को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जाता है। एक को निबन्धात्मक परीक्षा (Essay type of exam.) एवं दूसरे को वस्तुनिष्ठ-परीक्षा (Objective type of examination) कहा जाता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा-~~प्रश्न~~ एक आधुनिक एवं वैज्ञानिक परीक्षा प्रणाली है जिसका विकास निबन्धात्मक परीक्षा की त्रुटियों को दूर करने के लिये हुआ। परीक्षा का यह प्रारूप वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय है, क्योंकि इसमें परीक्षक की पक्षपात एवं मनमानी नहीं चल पाती है। इसको परिभाषित करते हुए सी० वी० गुड ने कहा है:-

"वस्तुनिष्ठ परीक्षा, सामान्यतः सत्य-असत्य उत्तर, बहुसंख्यक (बहुवैकल्पिक) चुनाव, मिलान या पूरक प्रकार के प्रश्नों पर आधारित होता है। इन प्रश्नों पर ठीक उत्तरों की तालिका के आधार पर अंक प्रदान किये जाते हैं, यदि कोई उत्तर तालिका से नहीं मिल पाता है तो उसे अशुद्ध मान लिया जाता है।"

इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि परीक्षा की वस्तुनिष्ठ प्रकार काफी लोकप्रिय एवं वैज्ञानिक परीक्षा पद्धति है। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न एवं items होते हैं। निबन्धात्मक परीक्षा

की कमजोरियों को दूर करने में बहुत हद तक कामयाब है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा में मुख्य रूप से पाँच प्रकार प्रश्न-पद होते हैं :-

1.) सत्य-असत्य परीक्षा :- वस्तुनिष्ठ परीक्षा के अन्तर्गत बच्चों की योग्यताओं की जाँच के लिए True false जाँच परीक्षा होती है। इसमें प्रश्न कथन के रूप में रहता है जिसमें परीक्षार्थी को कथन की सत्यता की जाँच करनी होती है। यदि कथन सत्य है तो (✓) का निशान और यदि गलत होता है तो (x) करना पड़ता है; या (T),(F) लिखना पड़ता है।

जैसे- भारत के प्रधानमंत्री महात्मा गाँधी थे।
आगरा का ताजमहल अकबर ने बनवाया था।

इस प्रकार के कथन रहते हैं जिसमें परीक्षार्थी सही या गलत या सत्य; असत्य) का निशान लगाता है। इसमें प्रश्नावली लम्बी होनी चाहिए तथा शिक्षक अपनी भाषा का प्रयोग करे तो ठीक होता है।

2) वाक्यपूर्ति परीक्षा :- वस्तुनिष्ठ परीक्षा के अन्तर्गत दूसरा महत्वपूर्ण जाँच परीक्षा प्रारूप "वाक्यपूर्ति परीक्षा" की होती है। इसे Test of information भी कहा जाता है। इसमें परीक्षार्थियों को रिक्त स्थान को भरना पड़ता है। वाक्य के प्रारम्भ में मध्य में या अन्त में खाली स्थान छोड़ा रहता है जिसे परीक्षार्थी को भरना पड़ता है :-

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री - - - - . थे।
एक रुपये में . . . . पैसे होते हैं।
. . . . एक खतरनाक गैस है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इस तरह के प्रश्नों से बालक भ्रम के शिकार होते हैं।

3) बहुवैकल्पिक परीक्षा :- इसके अन्तर्गत छात्रों को एक प्रश्न के कई विकल्प दिये रहते हैं जिनमें से एक सही होता है। सही उत्तर चुनना होता है जैसे :-

भारत की राजधानी है — (मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, इनमें से कोई भी नहीं)
गोलघर कहाँ पर स्थित है (पटना, हावड़ा, लखनऊ, जयपुर)

इसके विषय में मनोवैज्ञानिकों का सुझाव है कि प्रयुक्त भाषा सरल होनी चाहिए और दिये गये उत्तरों की लम्बाई एक समान होने पर अच्छा होता है।

(4) समरूप या मिलान (Matching) परीक्षा :- वस्तुनिष्ठ परीक्षा के अन्तर्गत Matching test भी ली जाती है। इस प्रकार के बातें सामानान्तर स्थलों पर दी जाती है। सामान्यतः बाँये तरफ के कालम में प्रश्न एवं दायें तरफ उसके उत्तर बिगड़े हुए क्रम में दिये रहते हैं। परीक्षार्थी को प्रश्न से उसके Matching के उत्तर को खोजना या मिलाना होता है। जैसे -

प्रसिद्ध स्थल या नाम		शहर
डलझील	—	पटना
गोलघर	—	लखनऊ
		काश्मीर
स्टील प्लांट		राँची
मानसिक अस्पताल		बोकारो

(5) सरल पुनः स्मरण जाँच परीक्षा :- वस्तुनिष्ठ परीक्षा के इस प्रारूप में दिये गये प्रश्नों का उत्तर परीक्षार्थी को अपने स्मरण से लिखना होता है :-

(1) भाखड़ा नांगल बाँध कहाँ है ? ( )
(2) ताजमहल को किसने बनवाया ? ( )

Type of examination में इस तरह हम देखते हैं कि objective होते हैं, जिनका वर्णन ऊपर किया गया है।

गुण या विशेषताएँ

वास्तव में वस्तुनिष्ठ परीक्षा का विकास निबन्धात्मक परीक्षा की सीमाओं एवं दोषों को दूर करने के लिये किया गया। इसीलिए निबन्धात्मक परीक्षा की आत्मगतता (Subjectivity) एवं पक्षपात आदि का दोष इसमें नहीं पाया जाता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत हैं :-

(1.) स्टैण्डर्ड एवं समानमापदंड :- इस परीक्षा प्रणाली में examinee की उत्तरों का मूल्यांकन बार-बार किसी भी परीक्षकों से कराई जाए कोई फर्क नहीं पड़ता है। हमेशा एक ही प्रकार के अंक प्राप्त होंगे।

(2) पक्षपात की कोई गुंजाइश नहीं :- यह एक विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षा है जिसमें पक्षपात की कोई गुंजाइश नहीं है। ~~परीक्षार्थी~~ परीक्षक चाहकर भी कोई जोड़ तोड़ नहीं कर सकता है।

(3) समय एवं श्रम की बचत :- इसमें 2 या $2\frac{1}{2}$ घंटे में परीक्षा सम्पन्न हो जाती है। कम समय में अधिक प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। अतः श्रम एवं समय दोनों की बचत होती है।

(4) विश्वसनीय एवं वैध :- यह एक वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रणाली है जिसमें गलत की संभावना कम है। अतः Essay type of Exam की तुलना में अधिक Reliable & Valid है।

(5) समग्र परीक्षा :- यह एक ऐसी परीक्षा प्रणाली है जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रमों का अध्ययन संभव हो जाता है। इसमें अधिक प्रश्नों को पूछने की गुंजाइश है। अतः सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछा जा सकता है।

(6) स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम :- यह परीक्षार्थियों की स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम विधि है क्योंकि अधिक समय मेहनत नहीं करना पड़ता।

(7) सरलता :- इस परीक्षा की एक अन्य विशेषता इसकी सरलता है। उसमें उत्तर देना आसान होता है।

(8) विवेक की कोई गुंजाइश नहीं :- इस परीक्षा में उत्तर हाँ ना में सत्य असत्य के रूप में देना पड़ता है। अतः गड़बड़ी की गुंजाइश नहीं के बराबर होती है। यह छात्रों की स्मरण शक्ति एवं निर्णयशक्ति की जाँच के लिये उत्तम प्रणाली है। इससे छात्रों की ये दोनों शक्तियों की वृद्धि होती है।

दोष या खामियाँ

उपर्युक्त गुणों या विशेषताओं के बावजूद इस परीक्षा प्रारूप में कुछ विसंगतियाँ या दोष भी पाये जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

(1) इस परीक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी दोष यह है कि इसमें प्रश्नों का उत्तर छात्र कभी कभी अटकल के आधार पर उत्तर दे देते हैं। कभी-कभी अनुमान पर आधारित उत्तर भी सही हो जाते हैं। उन छात्रों में सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है।

(2) इसकी दूसरी सीमा यह है कि छात्रों में लेखन शैली का विकास नहीं हो पाता।

(3) भाषा एवं व्याकरण का विकास इस परीक्षा शैली में अवरुद्ध हो जाती है। छात्रों की लेखन शैली के अलावे भाषा एवं व्याकरण का उचित विकास छात्रों में नहीं हो पाता है।

(4) इस परीक्षा प्रारूप का एक बड़ा दोष यह है कि इसमें प्रश्नों का निर्माण करना बड़ा ही कठिन कार्य है।

(5) छात्रों की रचनात्मक एवं चिंतन की क्रियाकलापों का उचित विकास नहीं हो पाता है।

(6) Objective type of examination में एक बड़ा दोष यह भी है कि इसमें छात्रों की आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास नहीं हो पाता है जिसके कारण छात्र किसी भी विषय पर अपना विचार विस्तार पूर्वक समालोचनात्मक ढंग से नहीं रख पाते हैं।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त गुण एवं दोषों का समालोचनात्मक अध्ययन करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचना आसान हो जाता है कि यह एक आधुनिक एवं वैज्ञानिक परीक्षा प्रणाली है। इसके द्वारा निबन्धात्मक परीक्षा के दोषों को दूर करने का प्रयास किया गया है। इसके बावजूद भी इस परीक्षाप्रणाली में कुछ त्रुटियाँ हैं जो इसकी सीमाएँ बन जाती है। यदि इस परीक्षा प्रणाली में कुछ प्रश्न दीर्घउत्तरीय एवं निबंन्धनात्मक प्रारूप की रखा जाए और कुछ अंक मौखिक परीक्षा के लिए रखा जाये तो यह सबसे कारगर एवं उपयुक्त विधि हो जाएगी। छात्रों की रुचि एवं योग्यता की वास्तविक मूल्यांकन के लिहाज से इसे उत्तम बनाकर उपर्युक्त सुझावों के साथ प्रस्तुत करना श्रेयस्कर होगा।